अलसी उत्पादन की नई नकनीक

आर एल राउत[1]*, कमलेशवर गौतम[2] एवं रमेश अमूले[3]

[1,2,3]कृषि विज्ञान केन्द्र, बालाघाट (बड़गॉव)

पत्राचारकर्ता : rsjm_rait71@yahoo.com

परिचय

अलसी नमी संरक्षण की दशा में एवं कम सिंचाई की व्यवस्था में उगाई जाती है। अलसी के फसल के लिये भूमि में उचित जल निकास की व्यवस्था होनी चाहिए। अलसी के फसल हेतु पी.एच. मान 6.5 से 8.5 के मध्य होना चाहिये। फली भरने की स्थिति में, नमी की कमी होने पर तेल की मात्रा कम हो जाती है। अलसी वर्षा आधारित या दो सिंचाई उत्पादन वाले क्षेत्रों मे उगाई जाती है।

उपयुक्त जातियाँ

- **असिंचित अवस्था -** जवाहर-9, जवाहर-552
- **सिंचित अवस्था** - किरण, नीलम, लक्ष्मी-27
- **दाने एवं रेशे वाली जातियाँ -** रश्मि, मीरा, पार्वती

भूमि की तैयारी

उचित जल निकास वाली खेत की मिट्टी भुरभुरी, नीदारहित एवं खेत का ढाल समरूप होना, फसल के लिए फायदेमंद होती है।

बीज एवं बीजोपचार

अलसी की फसल हेतु 20 किग्रा. बीज/हे. प्रयोग करें। रेशे वाली किस्मों के लिये बीज दर 45 कि. ग्रा. / हैक्टयर रखें। फसल बोने से पूर्व बीज को 3 ग्राम थायरम/कि. ग्रा. बीज से उपचारित करें।

उर्वरक/खाद

80 किग्रा. नत्रजन, 40 किग्रा. स्फूर एवं 20 किग्रा. पोटाश प्रति हैक्टर की दर से प्रयोग करें। नत्रजन की आधी मात्रा (40 किग्रा.) बोने के समय तथा शेष 40 किग्रा. नत्रजन पहली सिंचाई के समय डालें। इसके अतिरिक्त अधिक उपज व तेल की गुणवत्ता प्राप्त करने के लिए जिन्क सल्फेट 20 कि. ग्रा./हैक्टर तथा सल्फर 5 कि. ग्रा./हैक्टर की दर से डालना लाभदायक पाया गया है।

सिंचाई

अलसी के लिये केवल दो सिंचाईयाँ पर्याप्त है। पहली बोने के 35 दिन पर तथा दूसरी 70 दिन बाद करनी चाहिए। सिंचाई मेड़ मिट्टी विधि से करें ताकि आवश्यकता से अधिक पानी न भरें। रशे वाली किस्मों में तीन सिंचाई आवश्यक है।

खरपतवार नियंत्रण

बुवाई से 30-35 दिन तक खेत में खरपतवार नहीं रहना चाहिए। अंकुरण पूर्व मौसमी खरपतवारों के नियंत्रण हेतु पेंडामेथीलीन 1 कि. ग्रा. प्रभावी तत्व 750 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति हैक्टर की दर से बुआई पश्चात छिड़काव करें।

रोग नियंत्रण

अलसी फसल मुख्य तौर से गेरूआ, भूतिया एवं उकरा रोगों से ग्रसित होती है। उगरा रोग नियंत्रण के लिए थाइरम या बेविस्टीन 2 ग्राम प्रति किग्रा. बीज दर से उपचारित करें, भभूतिया रोग हेतु सल्फेक्स 0.2 प्रतिशत घोल एवं गेरूआ रोग के लिये डाइथेन एम-45 (0.2 प्रतिशत) घोल का छिड़काव करें।

कीट नियंत्रण

अलसी फसल में फली मक्खी का प्रकोप अधिक होता है। इसके अतिरिक्त चने की इल्ली का भी आक्रमण होता है। फलभख्खी के नियंत्रण हेतु क्लोरपायरीफास 2 मिली/ली. इंडोक्साकार्ब 0.6 मिली/लीटर के घोल का छिड़काव करें।

उपज

उन्नत जातियों से 15 से 17 क्विंटल तक दाने की उपज ली जा सकती है। रेशे वाली किस्मों से 500 से 900 क्विंटल रेशा तथा 10 क्विंटल तक दाने की उपज प्राप्त की जा सकती है।

अलसी की उन्नत किस्मों का विवरण

अलसी के विभिन्न किस्मों का विवरण निम्नलिखित है-

(अ) असिंचित व सिंचित अवस्थाली वाली फसलें

नीलम - यह जाति 135-140 दिन की अवधि में

पककर तैयार होती है। उपज क्षमता सिंचित अवस्था में 1500 किग्रा/हे. है। दानें भूरे छोटे टहनी फैलने वाली, रतुआ, उकता और सूखा सहन करने वाली 44 प्रतिशत तेल होता है।

लक्ष्मी-27 - यह जाति 115 दिन में तैयार हो जाती है। उपज क्षमता 1260 किग्रा सिंचित एवं 1020 किग्रा/हे. असिंचित खेती से प्राप्त होती हैं । दाने गहरे भूरे, बडे, रतुआ रोधी, चूर्णी फफूँद प्रतिरोधी तथा 45 प्रतिशत तेल होता है ।

जवाहर-552 - यह जाति 117 दिन में पकती है । उपज क्षमता 900 किग्रा/हे. असिंचित दशा में प्राप्त होती है । भूरे मध्यम बड़े दाने वाली, रतुआ उकता एवं चूर्णी फफूँद से मध्यम रोधित तथा 44 प्रतिशत तेल होता है।

किरण - यह किस्म 122 दिन में पकती है । उपज 750 किग्रा./हे. असिंचित दशा में प्राप्त होती है। मध्यम कैप्सूल, हल्के, भूरे दाने वाली रतुआ उकता, चूर्णी फफूँद रोधी एवं 43 प्रतिशत तेल पाया जाता है ।

जवाहर-9 - यह किस्म 115-125 दिन में पककर तैयार होती है । उपज 1250 किग्रा./हे. सिंचित, 1000 किग्रा./हे. असिंचित दशा में प्राप्त होती है। सफेद फूल, हल्के भूरे मध्यम मोटे दाने वाली उकता एवं चूर्णी फफूँद रोधी एवं 42 प्रतिशत तेल होता है ।

(ब) दाना एवं रेशा वाली किस्में

रश्मि - यह जाति 140 दिन में पककर तैयार होती है। दाने की उपज 1003 किग्रा/हे. 719 कि.ग्रा./हे. रेशा उपज प्राप्त होती हैं । अत्यन्त हल्का नीला फूल, लम्बी मध्यम दाने वाली चूर्णी फफूँद, रतुआ, उकता रोधी, अंगमारी एवं कलीकीट से मध्यम रोधित, तेलांश 41 प्रतिशत ।

मीरा - यह किस्म 130 दिन में पककर तैयार हो जाती है । इसकी उपज 1439 कि.ग्रा./हे. दाना एवं 1011 कि.ग्रा./हे. रेशा उपज प्राप्त होती है। बैंगनी नीला फूल भरे दाने वाली, रतुआ, उकटा, चूर्णी फफूँद रोधी, अंगमारी से मध्यमरोधी, कली कीट से सहनशील तेलांश 42 प्रतिशत होता है।

पार्वती - यह किस्म 140-146 दिन की अवधि में पककर तैयार हो जाती है। 1600 किग्रा./हे. दाना के साथ 1026 किग्रा./हे. रेशा प्राप्त होता है । नीला फूल, हल्का भूरे, मध्यम दाने वाली, रतुआ एवं चूर्णी फफूँद रोधी, अंगमारी, उकता एवं कलीकीट से मध्यम रोधित तेलांश 42 प्रतिशत हाता है।

निष्कर्ष

अलसी के उत्पादन से किसान अधिक आय प्राप्त कर सकते है। सबसे अच्छी बात यह है कि यह बारानी खेती के लिये उपयुक्त है। अलसी में पाये जाने वाले ओमेगा-3 वसीय अम्ल हृदय रोग के लिये अत्यंत लाभदायक है, वर्तमान में खाद्य तेलों की कीमतें भी तेजी से बढ़ी हैं ऐसे में अलसी की खेती निश्चित ही किसानों के लिये लाभप्रद साबित होगी।

❖❖